eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

सतत विकास एवं खाद्य सुरक्षा : भारत के सन्दर्भ में

प्रो0 कुमुद सिंह[1]
[1]आचार्य समाजशास्त्र, श्री अग्रसेन कन्या पी जी कॉलेज वाराणसी उ0प्र0

Received: 25 November 2025 Accepted & Reviewed: 28 November 2025, Published: 30 November 2025

Abstract

सतत् विकास एवं खाद्य सुरक्षा मानव अस्तित्व एवं सामाजिक प्रगति के दो आधार स्तम्भ हैं। भारत जैसे देश में, जहाँ कि कृषि अर्थव्यवस्था का आधार है और लगभग आधी से अधिक आबादी लगभग कृषि पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर है। वहाँ खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए पर्यावरणीय सन्तुलन बनाये रखना अत्यन्त चुनौतीपूर्ण कार्य है। प्रस्तुत शोध पत्र भारत के सन्दर्भ में सतत् विकास की अवधारणा का विश्लेषण करता है तथा इसे खाद्य सुरक्षा से जोड़कर सामाजिक, आर्थिक व पर्यावरणीय दृष्टियों से विवेचन करता है। इसमें भारत सरकार की प्रमुख नीतियों––राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, एवं नीति आयोग के सतत् विकास लक्ष्य सूचकांक का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन द्वैतीयक आँकड़ों (FAO, NITI Aayog, कृषि मंत्रालय आदि) पर आधारित वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि से किया गया है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारत ने खाद्य उपलब्धता एवं आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है, परन्तु जलवायु परिवर्तन, भूमि–क्षरण व निर्धनता जैसी गम्भीर चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

प्रमुख शब्द : सतत् विकास, खाद्य सुरक्षा, कृषि, सतत् विकास लक्ष्य, नीति आयोग, पर्यावरण।

Introduction

सतत् विकास की अवधारणा आज विश्व–राजनीति, अर्थशास्त्र व समाजशास्त्र जैसे विषयों का केन्द्रीय विमर्श का बिन्दु बन चुकी है। विकास का उद्देश्य केवल आर्थिक वृद्धि नहीं बल्कि सामाजिक समानता, पर्यावरण संरक्षण व भविष्य की आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों की सुरक्षा भी है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में यह प्रश्न और अधिक जटिल हो जाता है क्योंकि यहाँ जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अपनी आजीविका के लिए भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। खाद्य सुरक्षा सतत विकास का अनिवार्य अंग है। जब किसी राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को पर्याप्त पौष्टिक एवं सुरक्षित भोजन नियमित रूप से उपलब्ध हो तभी वह समाज विकासशील से विकसित देश बनने की दिशा में अग्रसर होता है। भारत ने पिछले कुछ दशकों में खाद्यान्न उत्पादन में उल्लेखनीय प्रगति की है– हरितक्रांति, तकनीकी नवाचार और सरकारी योजनाओं के माध्यम से देश आत्म–निर्भर बनने की तरफ अग्रसर हुआ, परन्तु इस प्रगति के साथ पर्यावरणीय क्षरण, जल संकट, रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता व भूमि क्षरण जैसी कई समस्याएँ भी उभरकर सामने आई है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि :

पिछले कुछ वर्षों में संयुक्त राष्ट्र (UN) और खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) ने यह स्वीकार किया है कि भूखमुक्त विश्व (मतव भ्नदहमत) का लक्ष्य सतत विकास के 17 लक्ष्यों में दूसरा प्रमुख लक्ष्य है। भारत के लिए जबकि आबादी 145.09 करोड़ से अधिक पहुँच चुकी है, अत्यन्त चुनौतीपूर्ण है। एक तरफ जहाँ भारत में अनाज उत्पादन लगभग 330 मिलियन टन (2023–2024) तक पहुँच चुका है वहीं दूसरी तरफ

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले लोगों की सख्या अब भी 20 प्रतिशत से अधिक है। (NITI Aayog, 2024) इस असंतुलन का कारण केवल उत्पादन नहीं बल्कि भण्डारण, वितरण व नीति क्रियान्वयन में असमानता भी है। इसलिए भारत में खाद्य सुरक्षा को सतत विकास के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझना आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. सतत विकास की अवधारणा का विश्लेषण करना।

2. भारत में खाद्य सुरक्षा की वर्तमान स्थिति, सतत विकास व खाद्य सुरक्षा के अन्तर्सम्बन्ध को स्पष्ट करना।

3. भारत सरकार की खाद्य सुरक्षा एवं सतत विकास से सम्बन्धित नीतियों के मूल्यांकन के साथ भविष्य के लिए नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

सतत विकास की अवधारणा : ब्रंटलैण्ड आयोग, सतत विकास अर्थ है ऐसा विकास जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं की क्षमता को प्रभावित करे।

सतत विकास तीन आयामों पर आधारित है–

1. आर्थिक सततता (Economic Sustainability) – विकास की प्रक्रिया में आर्थिक आर्थिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग।

2. सामाजिक सततता (Social Sustainability) – समान अवसर, सामाजिक न्याय व नागरिक कल्याण सुनिश्चित करना।

3. पर्यावरणीय सततता (Environmental Sustainability) – प्राकृतिक संसाधनों, जैव विविधता व पारिस्थितिक संतुलन का संरक्षण।

भारत ने 2015 में संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs) को अपनाया। नीति आयोग ने SDG India Index प्रकाशित किया, जो राज्यों की प्रगति को मापता है। भारत ने 2030 तक सभी 17 लक्ष्यों को प्राप्त करने का संकल्प लिया है, जिसमें खाद्य सुरक्षा (लक्ष्य–2), गरीबी उन्मूलन (लक्ष्य–1), स्वच्छ जल (लक्ष्य–6), जलवायु कार्रवाई (लक्ष्य–13) व सतत कृषि (लक्ष्य–15) शामिल हैं।

खाद्य सुरक्षा की अवधारणा एवं भारत की स्थिति

खाद्य सुरक्षा का अर्थ केवल भोजन की उपलब्धता नहीं, बलिक उसके सुलभ वितरण, पोषण मूल्य व उपयोग की क्षमता से भी है। संयुक्त राष्ट्र की Food Agriculture Organization (FAO), 1996 का कहना है "Food security exists when all people, at all times, have physical and economic access to sufficient, safe and nutritious food that mets their dietary needs and food preferences for an active and healthy life."

खाद्य सुरक्षा चार मुख्य स्तम्भों पर आधारित है––

1. देश में पर्याप्त मात्रा में खाद्य उत्पादन/आयात होना।

2. प्रत्येक व्यक्ति या परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक पहुँच उस भोजन तक होना।

3. पोषण, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भोजन का सही उपयोग।

4. समय–समय पर किसी प्रकार की आपदा, युद्ध या जलवायु परिवर्तन से खाद्य उपलब्धता पर विपरीत प्रभाव न पड़ने देना।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

भारत के सन्दर्भ में ये बातें अधिक महत्वपूर्ण इसलिए हैं क्योंकि यहा विविध जलवायु, असमान संसाधन वितरण व विशाल आबादी है।

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात् खाद्य सुरक्षा एक प्रमुख चुनौती रही। 1940–50 के दशक में भारत विदेशी सहायता पर निर्भर था। हरित क्रांति (Green Revolution) के बाद 1960–70 के दशक में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई, जिससे भारत खाद्य निगम (FCI) की स्थापना व 1970 में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) के सशक्तिकरण ने खाद्य सुरक्षा के तंत्र को मजबूत किया।

भारत वर्तमान समय में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा खाद्यान्न उत्पादक देश है। वर्ष 2023–24 में भारत का कुल खाद्यान्न उत्पादन लगभग 330 मिलियन टन से अधिक रहा। (Ministry of Agriculture, 2024) नीति आयोग का कहना है कि भारत में भोजन की उपलब्धता तो पर्याप्त है, परन्तु भोजन की पहुँच और पोषण के क्षेत्र में अभी असमानता बनी हुई है। वैश्विक भूख सूचकांक (GHI2024) में भारत 111वें स्थान पर रहा जो यह इंगित करता है कि पोषण की दृष्टि से अभी बहुत सुधार की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 (NFSA) के अन्तर्गत –

- देश की लगभग 67 प्रतिशत आबादी (80 करोड़ लोगों) को सस्ते दर पर अनाज (1–3 रुपये प्रति किग्रा) उपलब्ध कराया जाता है।
- आँगनबाड़ी सेवायें, मिड–डे–मील योजना व गर्भवती महिलाओं के लिए पोषण योजनाएँ शामिल हैं।

इस अधिनियम में खाद्य अधिकार को कानूनी रूप प्रदान किया गया है। इसके परिणामस्वरूप खाद्य वितरण प्रणाली में व्यापक सुधार हुआ लेकिन कार्यान्वयन स्तर पर कई राज्यों में भ्रष्टाचार, भण्डारण की कमी व अपात्र लाभार्थियों की समस्या बनी हुई है।

सतत विकास एवं खाद्य सुरक्षा का अन्तर्सम्बन्ध

सतत विकास व खाद्य सुरक्षा एक दूसरे से जुड़ी हुई अवधारणाएँ हैं।

- पर्यावरणीय दृष्टि से यदि कृषि उत्पादन अस्थिर या संसाधन उपलब्ध होगा तो भविष्य में खाद्य संकट उत्पन्न होगा, क्योंकि जलवायु परिवर्तन और भूमि क्षरण खाद्य सुरक्षा को सीधे प्रभावित करते हैं।
- आर्थिक दृष्टि से सतत विकास के बिना ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ नहीं हो सकती जिससे किसानों की आय कम और भूख की समस्या बढ़ती है।
- सामाजिक दृष्टि से सामाजिक समानता, महिला सशक्तिकरण व शिक्षा खाद्य सुरक्षा के दीर्घकालीन समाधान हैं।

FAO 2022 की रिपोर्ट के अनुसार जलवायु परिवर्तन और वैश्विक खाद्य उत्पादन में 10–25 प्रतिशत तक की गिरावट आने की सम्भावना है यदि सतत कृषि पद्धतियाँ नहीं अपनाई जाती हैं। भारत में सन् 2024 की मानसूनी अनिश्चितताओं ने यह स्पष्ट कर दिया कि सतत कृषि ही दीर्घकालिक सुरक्षा की गारण्टी दे सकती है।

भारत सरकार की प्रमुख नीतियाँ एवं योजनाएँ

Government Policies and Schems in India

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

1. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि– सन् 2016 से लागू इस योजना के तहत छोटे और सीमांत किसानों को 6000 रुपये प्रतिवर्ष प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण ;क्ठज्द्ध के माध्यम से किया जाता है। यह किसानों की आर्थिक स्थिरता को बढ़ाता है।

2. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना– कृषि जोखिम प्रबंधन हेतु यह योजना 2016 में प्रारम्भ हुई जो प्राकृतिक आपदा या फसल की क्षति होने की दशा में किसानों को बीमा सहायता प्रदान करती है।

3. राष्ट्रीय कृषि विकास योजना– यह राज्यों को कृषि विकास परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने वाली योजना है।

4. राष्ट्रीय पोषण अभियान – महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण कम करने हेतु यह अभियान सन् 2018 में प्रारम्भ हुआ। यह खाद्य सुरक्षा और पोषण के मध्य के बीच कड़ी को मजबूत करता है।

5. नीति आयोग का सतत विकास लक्ष्य सूचकांक :

भारत के विभिन्न राज्यो को SDG लक्ष्यों की प्राप्ति के आधार पर रैंक प्रदान किया जाता है। केरल, हिमाचल प्रदेश व तमिलनाडु शीर्ष पर हैं जबकि इस सूचकांक में बिहार, झारखण्ड व उत्तर प्रदेश पीछे हैं।

सतत कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था

Sustainable Agriculture and Rural Economy

सतत कृषि का अर्थ है ऐसी कृषि पद्धति जो पर्यावरणीय रूप से अनुकूल एवं आर्थिक रूप से लाभकारी तथा सामाजिक रूप से न्याय–संगत हो। जैविक कृषि में रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का कम प्रयोग करके जैविक खाद द्वारा प्राकृतिक उर्वरा शक्ति को बनाये रखने का प्रयास किया जा रहा है। जल संरक्षण में सूक्ष्म सिंचाई एवं वर्षा जल के संचयन से कृषि का भी संरक्षण करने का प्रयास सम्भव है। फसलों के उत्पादन में विभिन्नता लाने के लिए एक ही फसल पर निर्भरता कम करने का प्रयास तथा स्थानीय पोषण की आवश्यकतानुसार फसलों की बुवाई व उत्पादन का प्रयास सर्वोत्तम है। किसानों को सामूहिक आर्थिक लाभ देकर भारत में खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सकता है।

भारत में खाद्य सुरक्षा की प्रमुख चुनौतियाँ

(Major Challenges of Food Security in India)

भारत में खाद्य सुरक्षा की स्थिति अनेक नीतिगत उपलब्धियों के बावजूद कई संरचनात्मक, आर्थिक व पर्यावरणीय चुनौतियों से प्रभावित है जिनको निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा समझा जा सकता है–

1. जनसंख्या वृद्धि (Population Growth)-

भारत की जनसंख्या सन् 2024 में लगभग 43 अरब तक पहुँच चुकी है। (UNDP, 2024)

यह विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या है। इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए पर्याप्त खाद्य संसाधन उपलब्ध कराना एक सतत चुनौती है।

Rapid population growth in India continues to exert immense pressure on land, water and agricultural systems – FAO Reports, 2023

जनसंख्या वृद्धि से भूमि का खण्डन, शहरीकरण और कृषि भूमि में कमी जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जो खाद्य उत्पादन को प्रभावित करती है।

2. जलवायु परिवर्तन– जलवायु परिवर्तन खाद्य सुरक्षा पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। तापमान वृद्धि, अनियमित वर्षा व सूखे की घटनाओं ने कृषि उत्पादन में अस्थिरता पैदा की है। सन् 2023 की NITI Aayog Climate Vulnerability Report कहती है कि भारत लगभग 60 प्रतिशत जिलों में जलवायु जोखिम, मध्यम से उच्च स्तर का है। विशेष रूप से पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, ओडिसा और मध्य भारत के कृषक जलवायु जोखिम के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं।

3. भूमि एवं जल संसाधनों का क्षरण (Degradation of Land and Water Resources) %

भारत में लगभग 30 प्रतिशत कृषि भूमि किसी न किसी रूप में क्षरणग्रस्त है। (Indian Council of Agricultural Research, 2023)

रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग, वनों की कटाई व जल निकासी की खराब व्यवस्था से मिट्टी की उर्वरता घट रही है। भूमिगत जल का दोहन भारत को क्रमशःजमत`जतमेमक छंजपवद बना रहा है।

4. गरीबी और असमानता (Poverty and Inequality)-

खाद्य सुरक्षा केवल उत्पादन की समस्या नहीं है बल्कि वितरण की समस्या भी है। ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी और झुग्गी बस्तियों में पोषण की कमी एक गम्भीर समस्या है।

5. पोषण सम्बन्धी असमानता (Nutritional Inequality)-

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2021-22) के अनुसार, भारत में 35 प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं, 19 प्रतिशत बच्चों का वजन कम है, 57 प्रतिशत महिलाएँ एनीमिया से पीड़ित हैं। ये सारी सूचनाएँ ये दर्शाती हैं कि खाद्य सुरक्षा सिर्फ भोजन की उपलब्धता का नहीं बल्कि गुणवत्तायुक्त पोषण का भी प्रश्न है।

6. भण्डारण व वितरण में अक्षमता (Storage and Distribution Inefficiency)-

भारत में खाद्य निगम (FCI) के पास सीमित भण्डारण क्षमता है। प्रत्येक वर्ष लगभग 10 प्रतिशत खाद्यान्न खराब या नष्ट हो जाता है। (FCI त्मचवतजए 2023) यह अक्षमता खाद्य सुरक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी कमी है।

नीतिगत सुझाव (Policyt Recommendations)-

खाद्य सुरक्षा को सतत विकास के ढाँचे में सुनिश्चित करने के लिए कुछ प्रमुख नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किये जा सकते हैं–

1. जलवायु संवेदनशील कृषि नीति (Climate Sensitive Agricultureal Policy) –
2. (अ) ऐसी कृषि पद्धतियाँ अपनाई जायें जो जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को न्यूनतम करें।

(ब) Climate Smart Village मॉडल को राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया जाय।

(स) किसानों को जलवायु जोखिम प्रबंधन हेतु प्रशिक्षण व सूचना सुविधा दी जाये।

3. जैविक व प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन (Promotion of Organic and Natural Farming) :
(अ) रासायनिक उर्वरकों के विकल्प के रूप में जैविक खाद व वर्मी कम्पोस्ट को बढ़ावा दिया जाये।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

(ब) उत्तराखण्ड, सिक्किम जैसे राज्यों के मॉडल को अन्य राज्यों में लागू किया जाय।

4. कृषि में तकनीकी नवाचार (Technical Innovation in Agriculture) :

(अ) Digiga Agricultural Mission के तहत सैटेलाइट डेटा, ड्रोन व IOT आधारित कृषि पद्धतियों का विस्तार किया जाय।

(ब) किसानों को डिजिटल रुप से साक्षर कर प्रशिक्षित किया जाय।

4. महिलाओं की भूमिका सुदृढ़ करना (Empowering Women in Agriculture) -

(अ) ग्रामीण महिलाओं को सहकारी समितियों में अधिक प्रतिनिधित्व दिया जाय।

(ब) Self Help Groups (SHGs) को खाद्य सुरक्षा योजनाओं से जोड़ जाय।

5. खाद्य वितरण प्रणाली का आधुनिकीकरण (Modernisation of Food Distribution System) -

(अ) One Nation, One Ration Card (ONORC) को पूर्ण रूप से लागू किया जाय।

(ब) डिजिटल भण्डारण ट्रैकिंग प्रणाली बनाई जाय।

6. शिक्षा व जनजागरुकता (Education & Awareness) -

(अ) पोषण शिक्षा (Nutrition Education) को विद्यालय स्तर पर अनिवार्य किया जाय।

(ब) ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य अपव्यय (Food Waste) के प्रति जागरुकता अभियान चलाये जायें।

सतत विकास लक्ष्यों के अनुरूप भारत की प्रगति

(India's Progress towards SDGs)

लक्ष्य संख्या	लक्ष्य	भारत की स्थिति (नीति आयोग, 2024)
SDG 1	गरीबी उन्मूलन	गरीबी घटकर 2 प्रतिशत
SDG 2	भूखमुक्त भारत	पोषण में सुधार परन्तु असमानता जारी
SDG 6	स्वच्छ जल एवं स्वच्छता	94 प्रतिशत घरों में जलापूर्ति
SDG 12	जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन	प्रगति पर
SDG 13	जलवायु कार्रवाई	राज्यवार मिश्रित प्रदर्शन

उपरोक्त सभी लक्ष्यों में हमारा देश निरन्तर प्रगति कर रहा है, परन्तु Zero Hunger लक्ष्य अभी भी कठिन है। सतत विकास और खाद्य सुरक्षा भारत के लिए केवल नीति सम्बन्धी विषय नहीं बल्कि सामाजिक न्याय और मानव अधिकार का प्रश्न है। भारत को विकसित भारत 2047 की दिशा में अग्रसर होने के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना होगा–

1. भूमि, जल और ऊर्जा के संरक्षण हेतु संसाधनों का सन्तुलित उपयोग।

2. स्थानीय कृषि प्रणालियों को सशक्त बनाने के लिए स्थानीय पैदावार एवं कृषि के पारम्परिक ज्ञान को समृद्ध बनाना होगा।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 11, November 2025

3. समाज में सामाजिक समानता हेतु सभी जाति, धर्म, वर्ग, सम्प्रदाय के लोगों (कृषकों) को खाद्य सुरक्षा योजनाओं में समान रूप से सम्मिलित करना होगा।

4. कृषि में नवाचार एवं तकनीकी प्रगति के लिए वैज्ञानिक पद्धति को सामाजिक उपयोगिता के साथ संयोजित करना होगा।

इस प्रकार यदि भारत कृषि, पोषण व पर्यावरण में सन्तुलित दृष्टिकोण अपनाये तो न केवल खाद्य सुरक्षा बल्कि व्यापक सतत विकास का लक्ष्य भी प्राप्त किया जा सकता है। भारत यदि अपनी जनसंख्या के प्रत्येक नागरिक को पौष्टिक, सुरक्षित व सुलभ भोजन उपलब्ध कराने में सफल होता है तो यह न केवल सतत विकास की दिशा में बल्कि मानवीय सभ्यता के उच्चतम आदर्श की ओर भी एक सशक्त कदम होगा।

References :

1- Amartya Sen, 1981, Poverty and Famines : An Essay on Entitlement and Deprivation, Oxford Universty Press.
2- Brundtlant Commission, 1987, Our Common Future, Oxford University Press.
3- FAO (2023), The State of Food Security and Nutrition in the World 2023, Rome : United Nations.
4- Govt. of India, 2013, National Food Security Act 2013, Ministry of Consumer Affairs, Food & Public Distribution.
5- NITI Aayog, 2024, SDG India Index & Dashboard 2023-24, New Delhi : Government of India.
6- National Family Health Survey (NFHS-5), 2022, Report on Nutritional Status in India, Ministry of Health and Family Welfare.
7- World Bank, 2023, World Development Indicators, Washigton D.C.
8. कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, 2024 वार्षिक प्रतिवेदन, नई दिल्ली।
9. खाद्य एवं आपूर्ति विभाग, 2023, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम : कार्यान्वयन प्रतिवेदन।
10. योजना आयोग, 2022, भारत में पोषण और विकास की स्थिति।